भारतीय–दर्शन और विज्ञान भिक्षु

डॉ0 अशोक कुमार

विज्ञानभिक्षु एक प्रकार से सांख्य के अन्तिम आचार्य हैं। 16वीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध में ये काशी में ही विद्यमान थे। भिक्षु नाम धारण करने पर भी न तो ये बौद्ध थे न दशनामी सन्यासियों में अन्तर्मुक्त थे। यदि ऐसा होता है तो ये शंकराचार्य के मत की खरी अलोचना से अवश्य विरल होते। ये बड़े स्वतन्त्र विचार के सांख्याचार्य थे। इन्होंने उपनिषद् तथा पुराणों के युग के अनन्तर वियुक्त होने वाले सांख्य और वेदान्त में हृदयंगम सामंजस्य दर्शाया है। इन्होंने तीन दर्शनों के ऊपर भाष्यग्रन्थ लिखे हैं– (1) सांख्यप्रवचनभाष्य (सांख्यप्रवचनभाष्य (सांख्यसूत्रों पर) (2) योगवार्त्तिक (व्यासभाष्य पर) (3) विज्ञानामृतभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर)। इनके अतिरिक्त 'सांख्यसार' तथा 'योगसार' में इन दर्शनों के सिद्धान्त का संक्षिप्त प्रतिपादन सरल ढंग से किया गया है। इनके शिष्यों में भावागणेश का नाम प्रमुखता से मिलता है जो सांख्य विशेषज्ञ के थे, जैसा कि उनके तत्त्वसंग्रह के विद्वतापूर्ण व्याख्या ग्रन्थ तत्त्वयाथार्थ्यदीपन से पता चलता है। सांख्य–तन्त्र का अध्ययन–अध्यापन दुर्बल हो चला था। इसीलिए इन्होंने सांख्य को 'कालार्कभक्षित' कहा है, परन्तु इस तन्त्र की प्रणाली को पुनः जागृत करने तथा पुनरूज्जीवित करने में जितना श्लाघनीय उद्योग विज्ञानभिक्षु ने किया, वैसा किसी ने नहीं किया। सांख्य–योग को पुनः प्रतिष्ठित करने का सुयश विज्ञानभिक्षु को ही प्राप्त है।